नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विश्वविद्यालय में विश्व हिंदी दिवस पर परिचर्चा का आयोजन

हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए कृतसंकल्प हों – प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल

वर्धा, दि. 10 जनवरी 2020: हिंदी में ज्ञान सृजन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए हमें हिंदी को विश्व भाषा के रूप में विकसित करने हेतु कृतसंकल्प होना चाहिए। उक्त विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल ने व्यक्त किये। प्रो. शुक्ल विश्व हिंदी दिवस के मौके पर विश्वविद्यालय के अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ भवन के सभाकक्ष में आयोजित

परिचर्चा में अध्यक्षीय वक्तव्य दे रहे थे।

प्रो. शुक्ल ने कहा कि केवल साहित्य के अध्ययन-अध्यापन से हिंदी भाषा शिक्षण के व्यापक लक्ष्यों को प्राप्त नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि हिंदी के विकास और प्रसार को समर्पित विश्वविद्यालय होने के नाते हिंदी के विश्वव्यापी शिक्षण और विस्तार को गति देना हमारी जिम्मेदारी और दायित्व है। इस दृष्टि से उपलब्ध प्रौद्योगीकीय संसाधनों का समुचित उपयोग सहायक सिद्ध होगा।

साहित्य विद्यापीठ के सहायक प्रोफेसर डॉ. अशोकनाथ त्रिपाठी ने कहा कि विदेशी विद्यार्थियों को हिंदी सीखते हुए देखना सुखद अनुभव होता है। डॉ. उमेश कुमार सिंह ने कहा कि विदेशी छात्रों के अध्यापन की प्रक्रिया में आसान शब्दों के प्रयोग और भारतीय संस्कृति का ध्यान रखना आवश्यक है। डायस्पोरा विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. मुन्नालाल गुप्ता ने इस बात का समर्थन किया। डायस्पोरा

विभाग के प्रभारी डॉ. राजीव रंजन राय ने कहा कि हिंदी पढ़ाने के लिए पाठ के साथ दृश्य-श्राव्य

सामग्री का उपयोग जरुरी है। अकादमिक संयोजक डॉ. शोभा पालीवाल ने कहा कि हिंदी को वैश्विक फलक पर प्रतिष्ठित करने के लिए उच्चारण और लेखन में हिंदी के मानक रूप का प्रयोग करना चाहिए।

भाषा विद्यापीठ के सहायक प्रोफेसर डॉ. अनिल कुमार दुबे ने कहा कि बाजार में हिंदी की व्यापक उपस्थिति मात्र संतोष का विषय नहीं हो सकती बल्कि उसे ज्ञान की भाषा बनना होगा। गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग के डॉ. मनोज कुमार राय ने कहा कि हिंदी में मौलिक ज्ञान का निर्माण ही हिंदी को विश्वभाषा के रूप में स्थापित करेगा। भाषा विद्यापीठ के डॉ. हरीष हुनगुंद ने कन्नड और मलयालम भाषा पर संस्कृत के असर को लेकर अपना मंतव्य दिया। अनुवाद अध्ययन विभाग के डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी ने कहा कि लिंग और उच्चारण की समस्याएं न केवल विदेशी विद्यार्थियों के साथ है अपितु यह भारत के विविध अंचलों के छात्रों में भी देखी जाती है।

कार्यक्रम का संचालन भाषा विद्यापीठ में सहायक प्रोफेसर डॉ. अनिल कुमार दुबे ने किया। इस अवसर पर कजाकिस्तान के छात्र-छात्राओं हिंदी तथा कजाकी और हिंदी भाषा में गीत प्रस्तुत किए। कजाकिस्तान तथा भारत के राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम में डॉ. रवि कुमार, संदीप कुमार, डॉ. सन्मति जैन, रविशंकर शुक्ल, विजया सिंह, रश्मि रानी समेत अध्यापक एवं विद्यार्थी प्रमुखता से उपस्थित थे।